Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095

मिथिला का राजनीतिक मानचित्र

डॉ0 गरिमा
एम.ए., पीएच.डी. (इतिहास)
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार)

मिथिला की राजनीतिक पृष्ठभूमि के तीन ऐतिहासिक आयामों का आनुसंधानिक अध्ययन प्रस्तुत करना ही इस अध्ययन प्रस्तुत करना ही इस अध्याय का लक्ष्य है। वे है :–

1. मिथिला का राजनैतिक मानचित्र
2. 1526 से 1806 ई0 तक मिथिला की राजनैतिक–राजनैतिक–सामाजिक स्थिति। यह मुगलकालीन काल खंड था।
3. 1806 ई0 से 1952 ई0 तक मिथिला की स्थिति का विहंगावलोकन चूंकि अध्ययन का विषय विस्तार 1952 ई0 तक है अतः अध्येत्री को मुगल साम्राज्य का आगमन, विघटन, अंग्रेजों के आगमन, ईस्ट इंडिया कंपनी को शासक बनना, अंग्रेजी बादहशाहत के अधीन भारत का जाना, दो विश्वयुद्धों, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और अंत में स्वतंत्र भारत का उदय के कालखंडों में घटित मुख्य ऐतिहासिक घटनाओं का संक्षिप्त उल्लेख करना आवश्यक है। अन्यथा इतिहास के इस काल खंड के अनेक पहलू अनुछुए रह जायेगें।

मिथिला के भौगोलिक विस्तार की चर्चा बहुत कुछ पहले अध्याय में किया जा चुका है। पर इस पर विस्तार से चर्चा आवश्यक है। मिथिला के प्रागैतिहासिक, ऐतिहासिक तथा मध्यकाल के मानचित्र को प्रस्तुत करना कठिन है। पर मिथिला के विस्तार की प्रासंगिक चर्चा अनेक साहित्यों, अभिलेखों दंत कथाओं एवं आत्मकथाओं में उपलब्ध है। ध्यान देने की बात है कि किसी राज्य के क्षेत्र के भौगोलिक विस्तार में तरलता रहती है। सत्ता शक्ति के साथ–साथ इस में विस्तार या कमी अनिवार्य नहीं तो संभव तो आवश्यक है। स्पष्ट है कि प्रत्येक काल के किसी राजसत्ता का भौगोलिक विस्तार एक जैसा नहीं रह सकता। यो भी कर्णाट राजकुल (1097 ई0 से

1324 ई0 तक) ओइनवार वंश (1355 ई0 से 1526 ई0 तक) खंडवाल वंश (1577 ई0 से 1947 ई0 तक) आदि के समय भी मिथिला के अधिकार क्षेत्र में अनेक परिवर्तन आए। ओईनवार वंश के काल में डॉ0 रामप्रकाश शर्मा ने 1355 ई0 से 1526 ई0 का काल माना है जबकि विकीपीडिया के प्राप्त विवरण में यह 1326 से 1526 ई0 तक का है। इसके अतिरिक्त मुस्लिम काल में कई ऐतिहासिक परिदृश्य बदलें।

आज के मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर (पुराना दरभंगा) सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, हाजीपुर, (पुराना मुजफ्फरपुर) पूर्वी एवं पश्चिमी चंपारण, (पुराना चंपारण) बेगूसराय, खगड़िया, सहरसा तथा पूर्णिया के क्षेत्र मिथिला के अंतर्गत आते थे। मिथिला के क्षेत्र को तीरभुक्ति या तिरहुत भी कहा जाता है। इस दृष्टि से मिथिला की उत्तरी सीमा हिमालय (आज नेपाल) से लेकर दक्षिण में गंगा, पूरब में महानंदा और पश्चिम में नारायणी गंडक तक थी। गंगा बहिधि दक्षिण दिशि पूर्व कोशिकी धारा।

पश्चिम बहन गंडकी उत्तर हिमवत बल विस्तारा।।

हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' रचित 'बिहार की नदियाँ' में भी मिथिला के भौगोलिक क्षेत्र का परिचय मिलता है। कमला, बलान, बागमती, बूढ़ी गंडक, तिलयुगा, करेह, कोशी आदि के उद्‌गम और फैलाव का उल्लेख है। ये नदियाँ मुख्यतया मिथिला क्षेत्र में प्रवाहित होती हैं। जनकपुर जो सीता की भूमि है वह भी मिथिला का अंग था। आज यह स्वतंत्र देश नेपाल का क्षेत्र है। यदि हम कर्णाटवंशी सत्ता का ध्यान दें तो देखेंगे कि नेपाल के एक बहुत बड़े भू–भाग पर कर्णाट वंशियों का अधिकार था। कर्णाट वंशीय राजा ने 1098 ई0 में नेपाल पर विजय किया। 1198 तक उनका शासन नेपाल पर था। अतः मिथिला की भौगोलिक सीमा वर्तमान अवधारणा से कही अधिक विस्तृत थी। पाठक इस तथ्य से अवश्य ही अवगत होंगे कि तराई क्षेत्र के सीमा स्थित क्षेत्रों में रीति–रिवाज, शादी–व्याह, भाषा एवं वेश–भूषा में मिथिला का क्षेत्र 25000 वर्गमील का था। 25.28 और 26.52 देशांतर 84.26 तथा 84.46 अक्षांश रेखा के मध्य हमने हतपथ ब्राह्मण, मनुस्मृति आदि की चर्चा की है। जिससे भी मिथिला की भौगोलिक सीमा का बोध होता है।

''कोशिकीन्तु सभारभ्य गण्डकीमधिगम्य'' की युक्ति से भी मिथिला क्षेत्र का बोध होता है। लीक से थोड़ा हटकर देखें। उत्तर में जनकपुर से लेकर पुरब में पूर्णिया तक ऐसे ऐतिहासिक स्थल हैं जो मिथिला की संस्कृति के परिचायक माने जाएगें। यहाँ एक तथ्य का उल्लेख आवश्यक

प्रतीत होता है। मध्यकाल में मिथिला कभी भी स्वतंत्र ईकाई नहीं थी। चौदहवीं शताब्दी तक मिथिला बंगाल के अधीन था। छठीं से नवमी सदी तक पालवंश, नवमीं सदी से ग्यारवीं सदी तक सेन वंश, ग्यारहवीं सदी से चौदहवीं सदी तक देव वंश का 1326 से ओनीवार वंश का शासन रहा। कर्णाट वंशीय राजा की राजधानी सिमरॉव वीरगंज में थी। कुछ विद्वान बेतिया राज और दरभंगा राज के गोत्र एवं कुछ अन्य पक्षों को लेकर एक रजवारा मानते है, पर यहाँ वह हमारा विषय नहीं है।

यही देव वंश जिसका प्रारंभ नान्यदेव से हुआ था। कर्णाट वंश के नाम से जाना जाता है। चौदहवीं सदी में बंगाल मुस्लिम शासन के अंतर्गत आ गया। तुगलक ने बंगाल पर अधिकार कर लिया। इसके बाद मुगल शासन आया। पुनः ईस्ट इंडिया कंपनी, ब्रिटेन की सत्ता और अंत में स्वतंत्र भारत में मिथिला की स्थिति बदलती रहीं। ध्यान रहे कि ओनीवारवंश के राजा तथा बाद के राजा की हैसियत, कर देने वाले राजा की थी। वे स्वतंत्र नहीं थे। यद्यपि उन्हें राजा, महाराधिराज आदि उपाधि मुस्लिम तथा ब्रिटिश शासकों द्वारा प्राप्त होती रहीं। स्पष्ट है कि मुस्लिम विजय के साथ मिथिला की स्वतंत्र सत्ता नहीं रही।

हालांकि कुछ इतिहासकारों के अनुसार गंगदेव के समकालीन सेन वंशीय गौड़ नरेश ने 1203 में मिथिला पर विजय प्राप्त किया। बंगाल को पाँच भागों में विभाजित किया। वे थे–1.राधा 2. बागड़ी, 3. वंग, 4. वारेन्द्र और 5. मिथिला। इस तरह मिथिला बंगाल का अलग क्षेत्र बना। चीनी यात्री हुएनत्सं, पश्चिमी विद्वान जनरल कर्निघम आदि के अनुसार विदेहों की राजधानी चंपारण थी। कतिपय लोगों की यह धारणा है कि जानकी गढ़, जो नेपाल सीमा पर है, मिथिला अधिपति की राजधानी थी। पर इसका कोई प्रामाणिक आधार अध्येत्री नहीं ढूंढ सकी है पर इससे तो यह ज्ञात तो होता ही है कि बेतिया, मोतिहारी आदि का भू–भाग भी मिथिला के अंतर्गत थी। लोकमत और संस्कृत वांग्मय के अनुसार मिथिला की राजधानी जनकपुर थी।

मुगलकाल का प्रारंभ यो तो 1526 ई0 से होता है। पर अकबर के समय में ही आकर मुगल साम्राज्य का विस्तार मिथिला तक पुरा हो सका था। अकबर के पूर्व स्थिति में तरलता रही और इस क्षेत्र में प्रभुत्व स्थापित करने तथा रखने की कई ऐतिहासिक घटनाएँ घटी। हम यहाँ पुनः याद दिया दे कि ओनीवार वंश का शासन मिथिला में 1326 ई0 से 1526 ई0 तक रहा। फिर मुगल सत्ता का आगमन 1526 ई0 में होता है। अतः यह निष्कर्ष समुचित होगा कि मुगलों के आक्रमण के समय ओनीवार

वंश का सूर्यास्त चल रहा था। कामेश्वर ठाकुर वर्तमान समस्तीपुर के बेनी गाँव के थे। फलतः उनका वंश आनीवार वंश के रूप में जाना गया। कामेश्वर ठाकुर विद्वान तो थे ही पर वे प्रशासक के रूप में असफल रहे। फिरोजशाह ने उन्हें हटाकर उनके पुत्र भोगेश्वर ठाकुर को मिथिला का राजा घोषित किय। एक और ऐतिहासिक तथ्य बताते चले कि जिस समय मिथिला का राज्य कामेश्वर ठाकुर को दिया गया था उस समय कर्णाट कुल का अंतिम राजा हरिसिंह देव का पुत्र मतिसिंह नेपाल पर राज कर रहा था। 1575 ई0 में मुजफ्फरखाँ को बिहार का गर्वनर बनाया गया। ध्यान देने की बात है कि मुगलों के आगमन के पूर्व ही ओनीवार वंश के अंतिम राजा लक्ष्मी नाथ देव की राजसत्ता जा चुकी थी। वे भी गुजर गए थे। अतः खंडवाल कुल जिसके प्रथम राजा पंडित महेश ठाकुर से वर्तमान मिथिला के दरभंगा स्थित घराने का इतिहास आरंभ होता है। कहते हैं कि 1557 में मुगलसम्राट अकबर ने मिथिला का राज्य रघुनंदन राय को दे दिया। रघुनंदन राय ने इसे अपने गुरू महेश ठाकुर को दे दिया। किवदंतियों में भी इसकी चर्चा है श्री जयकांत मिश्र के अनुसार कर्णाट वंश के पराभाव के साथ मिथिला का पृथक हिन्दू राज्य मुसलमान शासक के अधीन आ गया।

मुगलकालीन मिथिला राज्य के शासकों में प्रमुख राघवसिंह, विष्णुसिंह और नरेन्द्र सिंह का विशेष उल्लेख हैं, कहते हैं कि नरेन्द्र सिंह और अलीवर्दी की सेना के बीच कंदर्पीघाट पर हुई थी। उस समय चकवारों जिनकी संख्या आज के बेगुसराय जिले में पर्याप्त है ने स्वतंत्रता घोषित की और अलीवर्दी खाँ को दबाया। ध्यान देने की बात है कि मुगलों के कारण ही दरभंगा राज्य अस्तित्व में आया। मुगलों के इस अनुग्रह को मिथिला नरेश ने सदैव याद रखा। क्योंकि महेश ठाकुर कुल का शासन मिथिला में मुगलकाल में ही नहीं बल्कि ब्रिटिशकाल में भी चलता रहा। 1526 से 1857 तक मुगलों का राज्य रहा। बाबर के समय से ही तिरहुत वार्षिक कर दिया करते थे। मुगलकालीन मिथिला लगभग 331 वर्ष का कालखंड अनेक दृष्टियाँ से ही इस शैक्षिक प्रयास का अभिष्ट है। मिथिला नरेश ने मुगलों को दुर्दिन के समय भी आश्रय दिया। महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह ने बहादुरशाह जफर के परिजनों को पनाह दी थी। भटियारी सराय में इस वंश के कब्रगाह आज भी है। बहादुरशाह जफर के पुत्र मिर्जा द्वारा बख्त के पुत्र जुबैरूद्दीन गुरगानी को यहाँ आश्रय मिला था।

संदर्भ सूची :

1. हिस्ट्री ऑफ मिथिला, डयूरिंग मुगल पिरीयड 1915, पृष्ठ 407–431, जे0एस0बी0 चक्रवर्ती.
2. एसपेक्ट्स ऑफ सोसाइटी एंड इकोनॉमी, ऑफ मेडिवल इंडिया, जानकी प्रकाशन, 1889, पेज–80, डॉ0 उपेन्द्र ठाकुर.
3. वही, पृष्ठ 41.
4. मिथिला का इतिहास–डॉ0 रामप्रकाश शर्मा, पृष्ठ 538.
5. सम एपियाग्राफिकल रेकार्डस ऑफ द मेडिवल परियिड फरौम ईस्ट इंडिया, पृष्ठ 43–44, डी.डी. सरकार.
6. इतिहासचक्र– डॉ0 राममनोहर लोहिया, भारती प्रकाशन, 15 ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद–1.
7. मिथिला का इतिहास–डॉ0 रामप्रकाश शर्मा, कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा, पृ. 51,1975.
8. ए सर्वे ऑफ मिथिला लिटरेचर–आर.के. चौधरी, पृष्ठ 26.
9. सुकुमार सेन इंडियन लियूस्टीकस.
10. शुभद्र झा, ए.वी.ओ.आर.आई. 11 पृष्ठ 106, 126,1940.
11. जर्नल ऑफ बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, वाल्यूम 13–3–4, पृष्ठ 298.